

38230 - वित्र की नमाज़ मग़िब की नमाज़ के तरीक़े पर पढ़ने का हुक्म

प्रश्न

कुछ इमाम तरावीह की नमाज़ में तीन रक़अत वित्र एक साथ दो तशहूद और एक सलाम के साथ (बिल्कुल मग़िब की नमाज़ के समान) पढ़ते हैं। तो क्या यह सही है ?

विस्तृत उत्तर

हर प्रकार की प्रशंसा और गुणगान केवल अल्लाह तआला के लिए योग्य है।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से प्रमाणित है कि आप ने वित्र की नमाज़ विभिन्न रूपों से पढ़ी है, आप ने उसे एक रक़अत, तीन रक़अतें, पाँच रक़अतें, सात रक़अतें और नौ रक़अतें पढ़ी हैं। तथा आप ने तीन रक़अत वित्र को दो तरीक़े से पढ़ी है : या तो आप उसे एक साथ एक ही तशहूद से पढ़ते थे, या आप दो रक़अत से सलाम फेर देते, फिर एक रक़अत पढ़ते और उस से सलाम फेर देते, और आप उसे मग़िब की नमाज़ के समान - दो तशहूद और एक सलाम के साथ - नहीं पढ़ते थे, बल्कि आप ने इस से मना किया है, चुनांचे आप ने फरमाया : “तीन रक़अत वित्र (इस तरह) न पढ़ो कि मग़िब के समान हो जाए।” इसे हाकिम (1/304), बैहक़ी (3/31), दारकुल्नी (पृष्ठ : 172) ने रिवायत किया है, तथा हाफिज़ इब्ने हज़र ने “फत्हुल बारी” (4/310) में फरमाया : उसकी इसनाद शैख़ैन (बुखारी व मुस्लिम) के शर्त पर है।

शैख़ मुहम्मद सालेह अल-उसैमीन ने फरमाया :

अतः वित्र की नमाज़ तीन रक़अत जाइज़ है, पाँच रक़अत जाइज़ है, सात रक़अत जाइज़ है और नौ रक़अत जाइज़ है, और यदि वह तीन रक़अत वित्र की नमाज़ पढ़ता है तो उसके दो तरीक़े हैं जो दोनों वैध (धर्म संगत) हैं :

पहला तरीक़ा : तीन रक़अतें एक साथ एक तशहूद से पढ़े।

दूसरा तरीक़ा : दो रक़अत से सलाम फेर दे, फिर एक रक़अत वित्र पढ़े।

ये सभी सुन्नत से प्रमाणित हैं, यदि वह कभी इस तरह पढ़ता है और कभी उस तरह पढ़ता है तो यह बेहतर है। . . . तथा उसके लिए जाइज़ है कि वह उसे एक सलाम से पढ़े, किंतु एक तशहूद से पढ़ेगा दो तशहूद से नहीं ; इसलिए कि यदि वह उसे दो तशहूद से पढ़ेगा तो वह मग़िब की नमाज़ के समान हो जायेगी, जबकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसे मग़िब की नमाज़ के समान पढ़ने से मना फरमाया है।



“अशरहुल मुम्ते“ (4/14-16).

तथा - अधिक जानकारी के लिए - प्रश्न संख्या (26844), तथा (3452) का उत्तर देखें, उसके अंदरक्रियामुल्लैल औ वित्र की नमाज़ के बारे में अच्छा और दीर्घ विस्तार मौजूद है।